

५९६१५ ६१ (८९)

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

७२६१५ ६१ (८९)

ग्रंथ नाम

रुक्मिणी स्वयंवर.

विषय

मराठी काव्य.

(1)

१।२९	५०।५००
२।५२	९१।७२
३।५३	९२।९५२
४।७५	९३।९०
५।९७	९४।९३
६।९००	९५।५६२
७।७७	९६।९६६
८।७७	९७।४०
९।६७	९८।८६
७०९॥ २७५	
१६७६	



इतिरुक्मं

शारदप्रसंग १८ पत्रं १२२

(२)

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीएकनाथाय नमः ॥ श्रीसहस्ररवे नमः ॥
 श्रीनमोजीश्रीदलनाथाः गणेशसदस्यतीना धरिता
 तुचीतुं कुळ देवताः कवना ज्ञातां प्रार्थुं ॥ १ ॥ तुचीनाखिळ
 अवघें जनः सहजगुतु जनार्दन ॥ कलकयेसी लावी मनः
 नीजासुगण गावया ॥ २ ॥ श्रीदलश्रवणः तेनेची नृ
 तीवेधलिजाण ॥ कर्माकर्मना विडुपलः लागलें ध्यानसि
 मकिसि ॥ ३ ॥ शुक्रयोगीदासतीः प्रह्वेलापरिधिती ॥
 श्रीमकिहरलाश्रिपतिः कावेनी मीर्यपेंकेलें ॥ ४ ॥ कांकरि
 तोसी फुलसिप्रह्वः तरिपिल्य तोदकजाण ॥ वदेन कथाश्रि
 मृतश्रवणः तेची जीवनमजतुई ॥ ५ ॥ वीरोडोहें कलचरि

(2A)

त्रः तु शे नी सी इ मु त्वे प वि त्र ॥ शु व र ण क र ि तं मा शे श्रे त्रः अ धि का त्र
 धि क षु के ले ॥ ६ ॥ इ त र क थान के फु डीः नी त्य नु त न रू ची गो डी ॥ से
 उं ज्ञान ति का व डिः ते प रा स र थ डि पा व जे ॥ ७ ॥ दे खो नी प्र ष्ठा वा
 का द तः शु क क थे सी जालो सा द त ॥ के से व च न बो ली ला गं श्री
 तः ले पा का पा र रा या र्थ ॥ वा र के वा पा परि क्षी तीः तुं त वे रू र्वा
 ची सु त्व मो र्तिः श्री म ति फ ल प्र ष ण स्थि ती ॥ ये था नी ग ती सां
 गे ण ॥ ८ ॥ का गा व सु दे ना ये त्र प रा म्नीः श्री क र्ण दे व कि उ
 द त ये ती ॥ क र्ण ची क र्ण म तिः जाली उत्तर त्रि मं उ कि ॥
 ॥ ९ ॥ क न का स वें जै सी कां तीः स र्वा स वें जै सी दी ति ॥ तै सी उत्
 र लि क र्ण श क्तीः वे द र्ण दे सी रू कि नी ॥ १० ॥ जै सा मु र्ति मुं त वी
 वे कुः तै सा ज्ञान रा जा जी म कु ॥ स सा थी का अ ति सा ती कुं

स्य०

(3)

निःकलं कुशोत्पलसे ॥ १५ ॥ अत्र द्वापत्रिषु द्वमतिः जालीः
पार्ते धरिति ॥ तेषु जन्मली लक्ष्मणः चित्वा स्त्रीरुक्मि
ली ॥ १६ ॥ नवविधातेची नवमासः गर्जापरले पुर्णदीवसः
सांगजन्मलीरुपसः नवविधावरुक्मिनी ॥ १७ ॥ पांचावीश
यांचासेवटिः जेवींरुक्मिनीपजेगोमटि ॥ तेषीपांचांहीधा
कुटीः जन्मलीगोमटिरुक्मिणी ॥ १८ ॥ जैजंनी जन्मलीकु
सीः तैरुक्मिणीआवडे राधासांगजामाएयकरुनी पांचांसीः तै
चीयेकीपठियंती ॥ १९ ॥ स्वतपतपे श्रुतिलंदरः लावणगुण
गुणगंभीर ॥ दीवसेंदीवसजालीघोरः वरविचाररायासी
॥ २० ॥ तेषुकीर्तीनामाब्राह्मणः रायापासींआलाजाण ॥

(3A)

तेथेकेलेखस्य कीर्तणःतेथेतनुमनुवेधले ॥१०॥वैसलिहोतीरायाणा
सीःसादरेदेलोनीपीप्रकिस्ती ॥मगवर्णिलेखस्यतपासीःचित्स्वरुपेसी
साकार ॥११॥जोनीरुंणनीवेकारःनिष्कर्षनीरोपचार ॥तोचीजालाजी
साकारःलिळावीग्रहीशीलस्य ॥१२॥अतिसुरंगचरणतळेंःउपमेकठि
नरातोसळें ॥बाळसूर्याचेनीउजळेंःतेसीकवळेंटाचाची ॥२१॥ध्रु
जवज्जंजुकुशारेखाःचरलि ॥वसापुडीकेदेखाःनवर्णवतिसह
सत्रपुरवाःब्रह्मांडीकाभल ॥२२॥पीडनीइडनीळकीकीवाती
लीखस्यतनुसांबळि ॥पाउलेसकुमारंकोबळिःघोटीवेनीलीदारी
मागी ॥२३॥सनीळनफानीयाकळीकाःतेस्यांजांगोळीयादेखाः
वरिनरेवेंत्याचंद्ररेखाःचरणीपीयुषालुब्धकप ॥२४॥सांडनी

वे

मां कठिण ह्यां उं सः सचेत न प्र गं जलं स ॥ तै से च र ए
 जि स्वयं सः दे स शक्ति रि शो मती ॥ २५ ॥ क स्य श्री ग
 जडु ले पणैः विजु ली मुठ च ड ले दु णै ॥ वि स र ति म्र ल
 मा ना जा णैः पिं तां ब र पणै का ले ली ॥ २६ ॥ ल स्य च र
 लि चें नी फू श लो वा कि ण वे दं श्री नी ले उ णै ॥ ति त इ
 वे ध रू नी ठे ले मी नः जाः की र्त ने हे ग र्जे ॥ २७ ॥ लो ह
 मा वा चे नी ग र्ज रेः च र णि ग र्ज ती ने पु रे ॥ मु मु
 धा चें म ण नी वे लु रेः त्या चे चे इ रे क री त ले ॥ २८ ॥ ति
 उ त्त ग र्जे क र णे मा लीः जे च म र ए ह रि च र नि ॥ ना

(5A)

नी

हीठपासर्का ला जो नीः संकल्प वी कल्प गेली यां ॥२९॥ अ
 नंत तपना कळे वेदीः तें आकळे सद्गु द्वीः तें सी मेख
 छा माजा मधिः चीद हसंधी जडली असे ॥३०॥ ह्य
 पद पावलि यां पाठीः जेवी कां वृत्ति होय उफराटी ॥ त
 स्या कीं कीं शुद्ध घंटी जेवी मुखें मेखळे ॥३१॥ अति
 स्येसी मा जु सानाः हे ज्ञान जि ज्ञान पंचा नणाः द
 र्वा नी रस मध्य रचणाः ला ज्ञा राणा तो गेला ॥३२॥
 पक्ष हाव या रस मध्य रचणाः चित्री ची लेपें जाली
 जाणां ॥ सांडु नी आगी च्या अज्ञानाः मेखळे
 तेव का स्वये जडिलें ॥३३॥ ना फी ली मा जी ना

(5)
भी तां: दे उ नि रा ही ला वी धा ता ॥ ते यी चा पा रु पा हा तां: पै वी धा ता णे ने
ची ॥ ३४ ॥ स्र लु नी प म्प ना नी ना वां: उ द रिं त्रै लो क सां ठे वा ॥ जे वी
सा ग रा मा ती ठे वा: त रं गा चा पे गा ॥ ३५ ॥ सा ग रिं । ल ह रि वि न क्का
की: तै सी वी गु ण वी व कि ॥ क र्मा क र्म रो मा व कि: वे ही मु ख वा ढी
न लिय ॥ ३६ ॥ न के कें ॥ हृ द यीं ने म हि मा न: उ प नि श द्दां प डि लें मो
न ॥ ते ये हीं स्व च र ले स ॥ ज त्त ॥ हा मि मा न सां डु नी ॥ ३७ ॥ शु ष्य
सां डु नी नी रा व का रा: ते री ॥ हृ द ई सा व का री ॥ सं ति के ला र
हि वा स: व नी शु ष्य हो उ नि ॥ ३८ ॥ ति ये प दि जे त ल्ही न: ते ची ज डि त
प द क ज्ञा न ॥ मु क्त मो ती ल ग लं पु र्ण: श्रु णे वी न गु णे ले ई ला से ॥ ३९ ॥
ज्ञा न वे स ग्य सु क्ति सं पु टि: नि फ ज लिं मु क्त मो ती ये गो म दिं ॥ ते ची
ए का व कि कं ठि: श्री कृ ष्णा च रणे म त्ता ॥ ४० ॥ ज ण वि ज्ज न स मा न कं का:

(5A)

तेवी-आपादवनमाळाः शांतीनीजशांतीनीर्मळाः तकेगळांवेज
यंती ॥४५॥ वैरीं कारमात्रुकासकटः तोचीजाणाक सुकंठा ॥ वै
दांवेजेमुळपीठः तेथुनीप्रकटतिकाडी ॥ ४५॥ रवाणो नीउपनि
षधांचीरवाणीः न्येकादीलावोधुनी ॥ तोचीकंठिकौस्तभम
निःणीजकर्तिशोपातु ॥ ४५॥ गणगजाचेशुंडादंडः तैखेसर
ळबाहुदंडा ॥ पतक्रचेनप्रचंडः भ्रमयेतनेउदित ॥ ४५॥ पं
चभूतेमीं न्नापीन्रः तैसां गोकळीयाजाण ॥ तळहातोभ्र
पिष्टानः पांचहिमीळतीयेकेमुष्टी ॥ ४५॥ चडुरवानीकीयाश
क्तिः त्याचीत्याहीपुजाशोचति ॥ त्यायुध्येहातबलिलिंहातिः फ
वनियेस्थीवीपाहापां ॥ ४६॥ असंततेजेतेजाकारः दैतदळनीसते

(6)

त० स्व०

प्रा १

जधारते च धगधगित चक्रः अरि मर्दनी उद्भट ॥ ७१ ॥ घायें अमि
 माना करि चेदाः ते च धगधगि सुळ के ये गदा ॥ निशब्दि उठ
 विंशब्दाः वेदानुवादा पांच जल्य ॥ ७० ॥ अचेद सक्त मज्जमेट
 तिः ते को सुमणे के श्री मीळ नि ॥ तयां सी पू जे ला गीं हातीः ह
 दये क मळिं वा हा तु से ॥ ४४ ॥ सा हे बा डु व रें की तीं शु त्वेंः स्या
 ही वेद जाले सुं के ॥ क रिक क र्णें ज डित मारणी केः वार्ता का
 न वेदां त ॥ ५० ॥ यत्र उ त व नि उ पा स कांः स्या ची आ गो की या
 उ ड्री का ॥ श्री को ण श डो नै क र्ति काः ज डित मानी कां आ ग
 मो क्त ॥ ५१ ॥ पूर्व उ त र मि प्रां स वो नीः कुं ड लें जालीं ल स्य श्र
 व णि ॥ उ प नि ष द र्थ की र निः स्रळ क ता ती स ते ज ॥ ५२ ॥ ये क स्र ण

५

५

(6A)

तिसाकारः येकसती मकराकारः ॥ परिते साचार निर्विकारः श्रवणेवी
कारभावकति ॥ ५३ ॥ गाकुनीया मोक्षसुखः तेथिंचा मुसाउनिह
रिरव ॥ तेची वक्षाचेश्री सुखः नित्यनी दोशामिरवत ॥ ५४ ॥ उपमे
चंद्रनीळा वर्णपाहणः तोतवसुष्टपक्षिंशीण ॥ उदो अस्तवीण
संपुर्णः वदनइदुक्षसा ॥ ५५ ॥ जीवशिवयेकाकारः तेसेमी
नेलेदोन्ही अधर ॥ माउदो पंचोतेजाकारः चिदा नंदे प्रळक
ति ॥ ५६ ॥ नास्तीकादेउनिजास्तीकः उंचावलें तेनाश्रीक ॥ पवण
हिंउतां पावलादुखः सुसत्यासेलखीजाला ॥ ५७ ॥ विशाळो
केचैतन्यपणेः तेथेवीसावों आलें पाहातें पाहाणे ॥ आपआ
पणादेखणेः सबाह्य अंतरसमदृष्टि ॥ ५८ ॥ ज्ञाणज्ञानाची

पातीः मिथ्या पणेल वत होती ॥ तेहीं सातु नि मा गुतीः सहज स्थिति पा
हातु से ॥ ५९ ॥ अधिष्ठान विष्णु क भांकीः ते सी शो भा व ल क पो कीः
सच्चिदानंद ये क मे कीः ते ची ची व किल ला टी ॥ ६० ॥ ठ गा कु नी अ ह प
णः सो ह का टी ले शु ड चं द नः ते ही के ले क र्णा र्प णः नि ज सा की मे क
व ड ॥ ६१ ॥ स पुर ग ग णा वुर सर कः ते से म ल की चे कुर क ॥ ल ल
मु खें सी वी मु ख स व क ल या ग ति धां वी न ले ॥ ६२ ॥ म्हा णो नी
ए क्वा ची ये मु छीः आ ट नी वा धी ली वि र गु ठी ॥ सह ज सा व वा
सु गु टीः म ग दा टी ले स्व ब द्ध ॥ ६३ ॥ त या मु गु टा चा त क व टिः मु
क्त म यो र प त्रां ची वे ठी ॥ कै सी शो म लि गो मु टिः दृ स्या दृ ष्टी अ ति
त ॥ ६४ ॥ स लो क स मि प स्व र प ताः जे त व पि ले सा डो स व धा ॥ द र
ने ष णे वी न डो के स ताः ते ची मा था त र्थ क ॥ ६५ ॥ अ ले का रा मा

६

६

(7A)

जी-आ वडि: ते शें श्री ललाची न्नाधिक गोडी तेची सांगो वी सरलें फू
डी: चुकी गाढी पडतसे ॥६६॥ सकळं कर्मा ना मुद्राण: ब्राह्मणा-चो
दक्षेण चरल ॥ ६६॥ यिं वाहे नारायण: श्री वस्त्रलां छन गोवीं दु ॥६७॥
ललाची या श्री मुर्ती: लावण्य ना लें श्री जगति ॥ बरवया बरवा श्री
पति: वावा की ती न्नानुवां दु ॥ ६८॥ जें अत्यंत सुंदर दिसे: ते तें लला
चे नीले रों: डोळ्या तेणे लाविलें पीलें: जालीं मोर विलें हरि-जांगी
॥६९॥ सुंदर्या वा अजिमान ॥ ७०॥ नां जांगीं संपूर्ण: तेणे देखोनी
यां श्री लल: स्वदेहासी जाणविनं टला ॥७०॥ मदने लल देखी लासां
ग: अंगजा कुनी जाला अनंग ॥ पोटाये उनियां चांग: उजमंग पा
वला ॥७१॥ बरवपणें मी मोटी: होतें लक्ष्मि चापोटी: लल देखोनी

त० स्व०

(18)

प्र
१

यां दृष्टीः तेही फ राटी ला जी ली ॥१७॥ क पा मा को नी यां कै सीः र मा जा
 ली पर प्र पि ति ॥ ल क्ष मि ना व डे व क्षा सीः जा ली दा सी पा या ची ॥१८॥
 व स दे र वी ली ज्या दृष्टीः ते पर तो नी मा गु ती नु ठी ॥ अ धि का अ धि
 क घा ली मी ठिः हो ए स खि ग ह रि त पीं ॥१९॥ व स पा हा व या लो माः
 न ये नी न य ना नी च जि जं म ना प्र व णे प्र व णा सी व लु माः अ पि
 न व शो मा श्री व क्षा ची ॥२०॥ व स र सु जे से वी ती जे सं तः त्यां सी पी के
 हो ये अं म त ॥ अ म र अं म लो ल वी तः ते ही च र फ डी त ह रि र सा ॥२१॥
 श्री या वा र वा नी ती अ म रें द्रः व स इ द्रा वा ही इ द्र ॥ स यो पा वे ति इ द्र चंद्रः
 व स न रें द्र अ क्ष इ ॥२२॥ अ सु र स र उ षा पी ती ते ही गा हा गे ह
 रि स दे ती ॥ इ द्र चंद्र प्र जा प तिः ते ही च र फ डि ति नी ज प दा ॥२३॥ ते व

त

(8A)

की उठे श्री ललनायुः कंसके स्त्रीया करि वातु ॥ सत्तांनी जपु दिं स्थापीतु
न्रपर नायश्चि लल ॥ ७९ ॥ ललारे लात्री सुद्धीः उतरन देवो स्थात्म बु
द्धीः सेव कावे सवी नीजपदिः अक्षयसीधी दे उनियां ॥ ८० ॥ ने दी च देव कि
ये शो दे स्त्रीः ते गति दि ध लि म ल ने य ॥ से मान दे णे न्नि रि मी वा सीः उदा
र ते स्त्री का ये व णु ॥ ८१ ॥ नि ज प दे सो ल ल नायुः सत्तांनी जप न यां दे
तु ॥ आप ण हो ये सत्तां कि तु हा ही ए तु ल्यां पा सी ॥ ८२ ॥ सत्तां मा
झा मानी मोटीः सीं ह शु क ली ज ग जे ही ॥ प्र ग ट ला को र डे कां शीः
व च ना सा टिं सत्ता च्या ॥ ८३ ॥ ए सा धि र उ तर सं दरः गु ण गु नी गु
ण गं नि र ॥ ८४ ॥ श्वी व रि य दु वी रः द ज्ञा नां ही सर्वं थ्या ॥ ८५ ॥ र ल च
र लि च आ रा मुः पा हा तां वी स रे क र्मां क र्मु ॥ स मा धी स ते ये वी श्रा मुः
म नो र म ह रि प द ॥ ८५ ॥ ले ल स्व रू पा वी प्रा सीः श्री म कि सा दर श्र व ना र्थी

हृदयिन्नायुर्नवलि मूर्तिः बह्ये स्फूर्ति माव कृती ॥८५॥ अंगजाले रोमां
 चीतः कंठीं वास्यपे द्रटले ॥ ८६॥ शरिश्चक चकां कां पतः पडिलि मुर्ध्नीत धरणि
 ॥८७॥ एक मृणाति धराधराः येकपालवेद्यालीती वाराः येक मृणति हे संद्रा
 कसकीर्तने प्रउपलि ॥८८॥ भक्ति पासी भाव नाजायेः तैसी धां बीने लि धा
 ये ॥ सनिदिठीला गेलगे मायेः सु लो नी कडिये घेतलि ॥८९॥ रायासी कळेंची
 लहः इसी जालें कस्य श्रवणः तयें वल जसे मनः कस्यार्पण हे करावी ॥९०॥
 लची धरुनी यां साकोः अंतः प्ररा जात रा वो ॥ रा क्यो नी सि कसना होः रा
 नी ये रा वो एस तु ॥९१॥ म ग बो ली ली सु इ म तिः हे ची हो तें मा प्राची तीः
 क न्या अर्पा वी श्री पतिः प्रण त्री ज ग ति नु स मा ये ॥९२॥ वरु मान लान्ना सा
 सीः क न्या दान श्री क सा सीः त रि च सा र्थ क ता जं न्या सीः दां प क्षा सी उ धो र
 ॥९३॥ विकल्प रु क्य यां क स दे सीः व न न न मा ने ची त या सीः का ये मृ णा दे

८

८

सोयेरी क नये का माः हे काये कळ लें नाहीं तुसां सखा मारी लाज
 हे मा माः तो काये जा सांध ड होइल ॥ ५ ॥ ये कल ल गति नंदा वाः ए
 कल ल गति व सु दे वा वाः ठाव नाहीं बा पा वाः अ कु की सा वा श्री क
 ल ॥ ३ ॥ मु की च नाहीं जं म प क्रः क व ण जा णे कु क गो त्रः ल स न
 के त्री स्व तंत्रः स क्र पर तंत्र स व ॥ ४ ॥ क ल ल स प ले ब ड का काः
 गो गोर सु गो व का ॥ तो त वं मा नु स प ना वे ग काः ना व र प स्या ना
 ही ॥ ५ ॥ क र्म ण हा तां तो पर द शीः गो गोर सा ची चो री करि ॥ ध रि
 तां न ध र वे नी र्धा रीः चो र टा हरि ची ता चा ॥ ६ ॥ गा इ पा ठीं धां व
 तां प कों सी क ला त व ता ॥ को क यौ व ना पु टें त व ता प क तांः
 जा लार क्षि ता म च कुं दु ॥ ७ ॥ क ल वी र न के गा डा प का ला

८

८

जरासंधापुढं ॥ सेणेसमुद्राविया नगडं: प्रागीलेदुर्गं वसतसे ॥८॥
 केसीयामारीलेतट: बेलुमारीलाअरिष्ट ॥ इतकियासाटीवाठु: केवी
 लूनटुल्लजावा ॥९॥ मारीलेंवघासरवांसरु: बगासुरतेपाखत: कि
 रडुमारीलेअघासुरत: इतुकेनीवीरकेविं होए ॥१०॥ कस्सालीउघडे
 नाहीवर्तणे: सदासंसारो लपणे: याचीजाणेमीवीदणे: लपतिस्वा
 नेतेंआइका ॥११॥ चढेवेकुसीयायेरी: क्षीरसागरिंदेतुबुडी:
 होशाचीयाफडेबुडी: मीसेनादेनेनीसहे ॥१२॥ विघ्नदेखोनीयां
 थोर: होयमछकांलसर ॥ नंतरिपाठीकरुनीनीबर: तपधरिक
 मगचें ॥१३॥ दैत्यदेखोनीयांमारी: खांबामाजीतो गुरुगुरी ॥ ब
 केकाठीयांवाहरी: नरनानारीहोनीढेला ॥१४॥ दैत्यदेखोनीयां
 सबळ: जालाभीकारीकेबळ ॥ बळिलेकेलाहारपाळ: गलाबाधा
 नीदारेसीं ॥१५॥ सर्वेचीखूजटपणसांडीलें: तपआणीकचिमां



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com